॥ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्री बाला-स्तोत्र-साधना

।। पूर्व-पीठिका—श्रीभैरव उवाच।।

अधुना देवि! बालायाः, स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति!।
पञ्चमाङ्गं रहस्यं मे, श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नतः।।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्री दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्री दक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः—शिरसि। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः—मुखे। ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः—हृदि। ॐ ऐं-बीजाय नमः—नाभौ। ॐ सौः-शक्तये नमः—गुह्ये। ॐ क्लीं-कीलकाय नमः—पादयोः। ॐ श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः—सर्वाङ्गे।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सौः कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ सौः शिखायै वषट्। ॐ ऐं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ सौः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान।।

अरुण-किरण-जालै रञ्जिताशावकाशा।
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था।
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-रूपा।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथिवी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल श्रीबाला-स्तोत्रम् ।।

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे! भवान्या, बीजं निशीथे जड-भाव-लीनः।
भवेत् स गीर्वाण-गुरोर्गरीयान्, गिरीश-पत्नि! प्रभुतादि[1] तस्य।। १।।
कामेश्वरि! ह्यक्षरी काम-राजं, जपेद् दिनान्ते[2] तव मन्त्र-राजम्।
रम्भाऽपि जृम्भारि-सभां विहाय, भूमौ भजेत् तं कुल-दीक्षितं च।। २।।
तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् यस्त्रैलोक्य-मातस्त्रिपुरे! पुरस्तात्।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते, निरामयं ब्रह्म-पदं प्रयाति।। ३।।
धरा - सद्म - त्रिवृत्ताष्ट - पत्र - षट् - कोण - नागरे!।
विन्दु-पीठेऽर्चयेद् बालां, योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत्।। ४।।

।। फल-श्रुति ।।

इति मन्त्र-मयं स्तवं पठेद् यस्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने।
स भवेद् भुवि सार्वभौम-मौलिस्त्रिदिवे शक्र-समान-शौर्य-लक्ष्मीः।। १।।
इतीदं देवि! बालाया, स्तोत्रं मन्त्र-मयं परम्।
अदातव्यमभक्तेभ्यो, गोपनीयं स्व-योनि-वत्।। २।।

॥श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी-संवादे श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम्॥

★★★

।। पाठ-भेद ।।

१- प्रभुतादि-प्रभयार्दि।
२- दिनान्ते-रतान्ते।

॥ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीबाला-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास और **अङ्ग-न्यास** कर **ध्यान** करे। यथा-

भगवती श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी के शरीर की आभा **अरुणोदय-काल के सूर्य-बिम्ब** की जैसी **रक्त-वर्ण** की है। उस आभा की किरणों से सभी दिशाएँ एवं अन्तरिक्ष लाल रङ्ग से रँगे हुए हैं। चार कर-कमलों में **जप-माला, पुस्तक, अभय** और **वर-मुद्राएँ** हैं। **पूर्ण खिले हुए रक्त-कमल** के पुष्प पर विराजमाना हैं। ऐसी **श्रीबाला** जगत् का नित्य कल्याण करनेवाली हैं। वे मेरे हृदय में निवास करें।

उक्त प्रकार से **ध्यान** करने के बाद **'मानस-पूजन'** कर **कवच का पाठ** करे। यथा-

।। कवच-पाठ ।।

हे त्रिपुरे! जो आप **भगवती** के वाणी-बीज **'ऐं'** का जप **महा-रात्रि** में भाव-निमग्न होकर करता है, वह **देव-गुरु वृहस्पति** से भी बढ़कर विद्वान् होता है और **हे शम्भु-पत्नि!** सभी प्रकार का स्वामित्व उसे मिल जाता है।।१।।

हे कामेश्वरि! जो **आपके** तीन अक्षरवाले काम-राज **'क्लीं'** का जप दिन के समाप्त हो जाने पर **(सन्ध्या-काल)** में करता है, उस कुल-मार्ग में दीक्षित साधक को वरण करने के लिए **जृम्भासुर** के विनाशक **देवराज इन्द्र** की भी सभा को त्याग कर **रम्भा** जैसी अप्सरा पृथ्वी पर चली आती है।।२।।

हे त्रैलोक्य-माता त्रिपुरे! जो तार्तीय-बीज **'सौः'** का जप करता है, वह विश्व में अपने चरित से लोगों को चमत्कृत कर अन्त में **आनन्द-मय ब्रह्म-पद** को प्राप्त करता है।।३।।

भू-पुर, त्रि-वृत्त, अष्ट-दल-पद्म, षट्-कोणात्मक नगरवाली हे जगदम्बिके! जो **विन्दु-पीठ** पर आप **'बाला'** का अर्चन करता है, वह **शिव-स्वरूप** हो जाता है।। ४।।

।। फल-श्रुति ।।

भगवती श्रीबाला-त्रिपुरा के उक्त **मन्त्र-मय स्तव** का जो **दिन के अन्त में** या **निशा-काल** में पाठ करता है, वह पृथ्वी पर सार्व-भौम महा-पुरुषों का नेता बनता है और स्वर्ग में **इन्द्र** के समान **शौर्य-लक्ष्मी** से युक्त होता है।।१।।

हे देवि! भगवती श्रीबाला का यह **मन्त्र-मय स्तोत्र** अति श्रेष्ठ है। **भक्ति-हीन** व्यक्तियों को इसे नहीं बताना चाहिए और अत्यन्त गुप्त बनाए रखना चाहिए।।२।।

★★★